Multidisciplinary Peer Reviewed & Refereed Journal ISSN 2231-1351

पदचिन्ह PADCHINHA

साहित्य, सिनेमा और समाज विशेषांक

फरवरी, 2025 वर्ष – 14 अंक – 2

अनुक्रम

		पृष्ठ संख्या
	संपादकीय_ डॉ. राकेश कुमार मिश्र	
1.	Lines in motion the convergence of art, literature, and cinema in indian culture **_Mrunal V Joharapurkar _Dr. Shashikant Rewade**	07-15
2.	Cinema and advertising a festive…. **_Deepali M. Limbekar _Dr. Kishor D. Ingale**	16-24
3.	मृच्छकटिकम पर आधारित फिल्म उत्सव में व्यक्त समाज _डॉ. विधु खरे दास	25-28
4.	सिनेमा पोस्टर डिज़ाइन में लिथोग्राफी, स्क्रीन प्रिंटिंग, ऑफ़सेट तकनीक का फिल्म उद्योग में योगदान **_चंद्रशेखर वसंतराव वाघमारे _डॉ. शशिकांत रेवडे**	29-37
5.	सिनेमा में महात्मा गांधी की उपस्थिति **_शिखा सिंह**	38-44
6.	सिनेमा और आदिवासी विमर्श **_ज्ञानेश्वर रामकिसन हालसे _प्रो. डॉ. विजय गणेशराव वाघ**	45-49
7.	सिनेमा और राष्ट्रवाद : एक विश्लेषण **_डॉ. वळेकर गहिनीनाथ नारायण**	50-52
8.	हिन्दी सिनेमा की पहुँच के दायरे में उभयलिंगी समुदाय **_मिन्नी गुप्ता**	53-59
9.	अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद : सिनेमा, साहित्य और मीडिया विमर्श **_राम कुमार सिंह**	60-66
10.	सिनेमा (प्रलेखात्मक फिल्म) और आदिवासी कला **_अभिषेक चौरसिया _डॉ. किशोर इंगले**	67-71
11.	साहित्यिक कृतियों का सिनेमाई रूपांतरण में वर्तमान समाज की भूमिका **_कान्ता रॉय**	72-79
12.	ईरान से हिंदुस्तान तक की सिनेमा में गांधी **_विशाल कुमार**	80-84
13.	गीतिनाट्य एवं रंगमंचीय तत्वों का विश्लेषण : 'अंधा युग' के विशेष संदर्भ में **_शाश्वती खुंटिआ**	85-91
14.	वैश्विक स्तर पर सॉफ्ट पावर कूटनीति के रूप में भारतीय सिनेमा का बढ़ता प्रभाव **_अदिति सिंह**	92-98
15.	भारतीय सिनेमा और साहित्य में पर्यावरण चेतना **_कुसुम डूंगरवाल**	99-104
16.	भारतीय सिनेमा में स्त्री अस्मिता का विश्लेषण **_मंजुल कुमार सिंह**	105-112
17.	यात्रा आधारित हिंदी सिनेमा और घुमक्कड़शास्त्र **_ध्रुव कुमार**	113-117
18.	समसामयिक घटनाएं और हिंदी सिनेमा **_मिथुन नोनिया**	118-123
19.	सिनेमा, साहित्य और समाज में हिंदी ग़ज़ल का प्रभाव **_चित्रांश खरे**	124-130
20.	हिंदी सिनेमा और विकलांगता **_रोजी दण्डसेना**	131-136
21.	'तिरिया चरित्तर' कहानी और फ़िल्म स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में एक विवेचन **_राणाप्रताप राय**	137-142
22.	पोथेर पांचाली का सामाजिक एवं साहित्यिक अध्ययन **_आदित्य तिवारी**	143-146
23.	सिनेमा में स्त्री विमर्श **_कुमारी श्वेता**	147-153
24.	हिंदी साहित्य का सिनेमाई रूपांतरण : एक नई पहचान **_प्रांजल बरनवाल _अजीत कुमार गौतम**	154-160
25.	सिनेमा साहित्य और रंगमंच **_गुलफ़िशा**	161-163
26.	Beyond the walls: Graffiti as a narrative tool in Indian social **_Dr. Kishor D. Ingale**	164-168
27.	OTT'S cinema and social landescape **_Manish Tiwary**	169-174
28.	NOTES FOR AUTHORS	

अतिथि संपादक मंडल

डॉ. चित्रा माली
सहायक प्रोफेसर, क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

डॉ. संदीप मधुकर सपकाले
सहायक प्रोफेसर, दूर शिक्षा निदेशालय
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

डॉ. अभिषेक सिंह
सहायक प्रोफेसर, गांधी एवं शांति अध्ययन वि.
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

डॉ. प्रदीप
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

डॉ. देवेन्द्र मौर्य
शोध-सहायक, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

डॉ. प्रिंस कुमार सिंह
पोस्ट डॉक्टरल फेलो, गांधी एवं शांति अध्ययन वि
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

चंद्रमणि राय
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

योगेश कुमार जांगिड़
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

सुमन्त कुमार मिश्र
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, म गां अं हि वि

सौरभ मिश्र
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, म गां अं हि वि

अभिषेक द्विवेदी
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, म गां अं हि वि

गुलशन कुमार
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, म गां अं हि वि

संदीप कुमार शुक्ल
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

प्रविण दामोधरराव कोल्हे
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

कु. सोनम
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, म गां अं हि वि

उत्तम आनंदराव केते
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, म गां अं हि वि

महेश किष्टय्या दुर्गम
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

निरंजन कुमार
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

विकाश अग्निहोत्री
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, म गां अं हि वि

अपर्णा सिंह
प्राचार्य, मुदित बाल विद्यालय, वर्धा

मिथिलेश कुमार गिरी
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

हर्ष वर्धन
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

R.N.I. UPHIN/2011/37086 PADCHINHA
बहुविषयक पीअर रिव्यूड एंड रेफेरीड जर्नल

संपादकीय

डॉ. राकेश कुमार मिश्र*

साहित्य और समाज का संबंध बहुत पुराना है। अक्सर साहित्य को समाज का प्रतिबिम्ब कहकर संबोधित किया जाता है। यह उचित भी है, क्योंकि समाज में घट रही घटनाएँ, उसकी प्रवृत्तियों, उसके राग-विराग और उसमें घड़कते समय के अलावा साहित्य का कोई उपयोगी स्वरूप बन नहीं सकता।

लेकिन हमें यह नहीं भूलता चाहिये कि साहित्य का यह सामाजिक अवतार जिसे हम अक्सर यर्थाथवाद के नाम से अभिहित करते हैं, वह भी एक लंबी प्रक्रिया के बाद ही अस्तित्व में आया है। तमाम कलारूपों की तरह ही साहित्य का भी प्रारंभिक उद्देश्य मनोरंजन ही हुआ करता था। साहित्य का मेयार बदलने, उसके मशाल होने और उसकी सामाजिक उपादेयता सिद्ध करने में निश्चय हो हमारे पुरखे रचनाकारों न वर्णनातीत श्रम किया है।

सिनेमा अभी तक मुख्यत: मनोरंजन का ही साधन माना जाता रहा है। अपने निर्माण में, इसकी प्रक्रिया में और इसके मंतव्य में निश्चय ही उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं, परंतु सिनेमा में लगने वाला पैसा या यूँ कहें कि इसमें होने वाले भारी पूंजी निदेश ने सिनेमा के लोकप्रिय होने के तत्त्व को प्रमुखता से थामे रखा है। 'लोकप्रियता' ही वह प्रस्थान बिंदु है, जहाँ से सिनेमा और साहित्य के रास्ते अलग हो जाते हैं। लोकप्रियता पूंजी की विवशता है। लोकप्रियता के सिद्धांतकारों ने विस्तार से इस तथ्य को रेखांकित किया है कि कैसे लोकप्रिय चीजें व्यापक सामाजिक बदलाव का वाहक नहीं बन सकतीं। वह अपने सीमित दायरे में मनुष्य के ऊपरी आवेगों को सहलाते हुए उनके

* **संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं अध्यक्ष**
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

विरेचन का दायित्व निभाकर संतुष्ट हो जाती हैं। जबकि जो चीजें लोकप्रियता से आगे बढ़कर सार्थकताकी तरफ बढ़ती है वे एक बड़ बदलाव का वाहक हो सकती हैं। इसलिये 'साहित्य' में लोकप्रियता एक 'नकारात्मक' अवधारणा के तौर पर विकसित हुआ जबकि सिनेमा सार्थकता की ओर बढ़ते हुए भी लोकप्रियता के अपने आकर्षण और जरूरत से कभी मुक्त नहीं हो सका।

परंतु पिछले दो-तीन दशकों से सिनेमा के चरित्र और इसकी उपस्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। सिनेमा के नये व्याकरण ने यह सिद्ध किया है कि लोकप्रियता और सार्थकता अनिवार्यत: विरोधी और बिलोम नहीं होते। यदि मंतव्य में स्पष्टता हो, और समाज के प्रति अपने दायित्वों का सही बोध हो तो लोकप्रिय चीजें भी सार्थक बदलाव का वाहक हो सकती हैं। सिनेमा के इस बदलते कलेवर और तेवर ने इसे एक अकादमिक आभा भी दी है। अब सिनेमा को भी एक गंभीर विमर्श की तरह पढ़ा और समझा जा रहा है। समाज के कई ज्वलंत और बहस तलब मुद्दे सिनेमा में भुखरित हो रहे हैं, और अब समाज की नब्ज टटोलने और उसपर मुकम्मल बातचीत करने के लिये सिनेमा को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

'सिनेमा, साहित्य और समाज' के इन्हीं नये अंत: संबंधों के तलाशने हेतु महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, भारतीय सामाजिक विज्ञान परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से 'सिनेमा, साहित्य और समाज का अंत: संबंध' विषय पर इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। हमें उम्मीद है कि इस संगोष्ठी से प्राप्त नये निष्कर्षों के आलोक में हम इस विषय की और बेहतर समझ बना सकेंगे।

***